2

शिक्षा व मनोविज्ञान मे सम्बन्ध
RELATION OF EDUCATION & PSYCHOLOGY

Psychology explains the *how* of human development as related to learning *education* attempts to provide the *what* of learning —**Crow & Crow** (p 8)

भूमिका

शिक्षा और 'मनोविज्ञान' को जोडने वाली कडी हे—'मानव व्यवहार । इस सम्बन्ध मे दो विद्वानो के विचार दृष्टव्य है —

1 ब्राउन (Brown) —"शिक्षा वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में परिवतन किया जाता है ।"

2 पिल्सबरी (Pillsbury) —"मनोविज्ञान, मानव व्यवहार का विज्ञान है ।"

इन परिभाषाओ से शिक्षा और मनोविज्ञान के सम्बन्ध पर पर्याप्त प्रकाश पडता है। दोनो का सम्बन्ध मानव व्यवहार से है। शिक्षा, मानव व्यवहार मे परिवतन करके उसे उत्तम बनाती है। मनोविज्ञान, मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। इस प्रकार, शिक्षा और मनोविज्ञान मे सम्बन्ध होना स्वाभाविक है। पर इस सम्बन्ध मे मनोविज्ञान का स्थान श्रेष्ठ है। इसका कारण यह है कि शिक्षा को अपने प्रत्येक काय के लिये मनोविज्ञान की स्वीकृति प्राप्त करनी पडती है। **बी० एन० झा ने ठीक ही लिखा है —"शिक्षा जो कुछ करती है और जिस प्रकार वह किया जाता है, उसके लिये उसे मनोवज्ञानिक खोजो पर निभर होना पडता है।"**

Education has to depend on psychological findings for what it does and how it is done —**B N Jha** (p 13)

मनोविज्ञान को यह स्थान इसलिये प्राप्त हुआ है, क्योकि उसने शिक्षा के सब क्षत्रो को प्रभावित करके उनमे क्रान्तिकारी परिवतन कर दिये हैं। इस सदभ मे

रयान (Ryan) के ये सारगर्भित वाक्य उल्लेखनीय हैं —"**आधुनिक समय के अनेक विद्यालयो मे हम मित्रता और सहयोग काय का वातावरण पाते हैं। अब उनमे परम्परागत औपचारिकता, मजबूरी मौन, तनाव और दण्ड के अधिकतर दशन नहीं होते हैं।**'

मनोविज्ञान द्वारा किये जाने वाले परिवतन
Changes Brought about by Psychology

मनोविज्ञान ने शिक्षा के क्षेत्र मे जो क्रान्तिकारी परिवतन किये है उनका वणन निम्नाकित शीषको के अ तगत किया जा रहा है —

(1) बालक को महत्त्व—पहले शिक्षा विषय प्रधान और अध्यापक प्रधान थी। उसमें बालक को तनिक भी महत्त्व नही दिया जाता था। उसके मस्तिष्क को खाली बतन समझा जाता था जिसे ज्ञान से भ रना शिक्षक का मुख्य कत्त य था। मनोविज्ञान ने बालक के प्रति इस दृष्टिकोण मे आमूल परिवतन करके शिक्षा को बाल-केन्द्रित बना दिया है। अब शिक्षा बालक के लिये है, न कि बालक शिक्षा के लिये।

(2) बालको की विभिन्न अवस्थाओं को महत्त्व—प्राचीन शिक्षा पद्धति मे सभी आयु के बालको के लिये एक सी शिक्षा और एक सी शिक्षण विधियो का प्रयोग किया जाता था। मनोवज्ञानिको ने इन दोनो बातो को अनुचित और दोषपूण सिद्ध कर दिया है। उनका कहना है कि बालक जसे-जैसे बडा होता जाता है, वसे वसे उसकी रुचियाँ और आवश्यकताये बदलती जाती हैं, उदाहरणाथ बाल्यावस्था मे उसकी रुचि खेल मे होती है पर किशोरावस्था मे वह खेल और काय मे अ तर समझने लगता है। इस बात को ध्यान मे रखकर बालको को बाल्यावस्था मे खेल द्वारा और किशोरावस्था मे अन्य विधियो द्वारा शिक्षा दी जाती है। साथ ही उनकी शिक्षा के स्वरूप मे भी अन्तर होता है।

(3) बालकों की रुचियो व मूल प्रवृत्तियों को महत्त्व—पूव काल की किसी भी शिक्षा-योजना मे बालको की रुचियो और मूल प्रवृत्तिया का कोई स्थान नही था। उन्हें ऐसे अनेक विषय पढने पडते थे, जिनमे उनको तनिक भी रुचि नही होती थी और जिनका उनकी मूल प्रवृत्तियो से कोई सम्ब ध नही होता था। मनोविज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि जिस काय मे बालको को रुचि होती है उसे वे जल्दी सीखते है। इसके अतिरिक्त, वे काय करने मे अपनी मू न प्रवृत्तियो से प्रेरणा प्राप्त करते है। अत अब बालको की शिक्षा का आधार उनकी रुचिया और मूल प्रवृत्तियाँ है।

(4) बालकों की व्यक्तिगत विभिन्नताओ को महत्त्व—शिक्षा की प्राचीन विधियो मे बालको की यक्तिगत विभिन्नताओ को स्वीकार नही किया जाता था। अत सबके लिये समान शिक्षा का आयोजन किया जाता था। मनोविज्ञान ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि बालको की रुचियो, रुझानो क्षमताओ योग्यताओ आदि म

अन्तर होता है। अत सब बालको के लिये समान शिक्षा का आयोजन सर्वथा अनुचित है। इस बात को ध्यान मे रखकर मन्द-बुद्धि पिछडे हुए और शारीरिक दोष वाले बालको के लिये अलग अलग विद्यालयो मे अलग अलग प्रकार की शिक्षा की यवस्था की जाती है। **Kuppuswamy** (p 4) के शब्दो मे — **"व्यक्तिगत विभिन्नताओ के ज्ञान ने इन व्यक्तिगत विभिन्नताओ के अनुकूल शैक्षिक कार्यक्रम का नियोजन करने मे सहायता दी है।"**

(5) पाठ्यक्रम मे सुधार—पहले समय मे पाठ्यक्रम के सब विषय सब बालको के लिए अनिवार्य होते थे। इसके अतिरिक्त वह पूर्ण रूप से पुस्तकीय और ज्ञान प्रधान था। मनोविज्ञान ने पाठ्यक्रम के इन दोनो दोषो की कटु आलोचना की है। वह इस बात पर बल देता है कि पाठ्यक्रम का निर्माण बालको की आयु रुचियो और मानसिक योग्यताओ को ध्यान म रखकर किया जाना चाहिए। यही कारण है कि आठवी कक्षा के बाद पाठ्यक्रम को साहित्यिक, वैज्ञानिक आदि वर्गों मे विभाजित कर दिया गया है।

(6) पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओ पर बल—प्राचीन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक का मानसिक विकास करना था। अत पुस्तकीय ज्ञान को ही महत्त्व दिया जाता था और पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओ का कभी विचार भी नही किया गया। मनोविज्ञान ने बालक के सर्वाङ्गीण विकास के लिये इन क्रियाओ को बहुत महत्त्वपूर्ण बताया है। यही कारण है कि आजकल विद्यालयो मे खेलकूद, सास्कृतिक कार्यक्रम आदि की विशेष रूप से यवस्था की जाती है।

(7) सीखने की प्रक्रिया मे उन्नति—पहले शिक्षको को सीखने की प्रक्रिया का कोई ज्ञान नही था। वे यह नही जानते थे कि एक ही बात को एक बालक देर मे और दूसरा बालक जल्दी क्यो सीख लेता था। मनोविज्ञान ने सीखने की प्रक्रिया के सम्बन्ध मे खोज करके अनेक अच्छे नियम बताये है। इनका प्रयोग करने से बालक कम समय मे और अधिक अच्छी प्रकार सीख सकता है।

(8) शिक्षण विधियो मे सुधार—प्राचीन शिक्षा पद्धति मे शिक्षण विधियाँ मौखिक थी और बालको को स्वय सीखने का कोई अवसर नही दिया जाता था। वे मौन श्रोताओ के समान शिक्षक द्वारा कही जाने वाली बातो को सुनते थे और फिर उनको कठस्थ करते थे। मनोविज्ञान ने इन शिक्षण विधियो मे आमूल परिवतन कर दिया है। उसने ऐसी विधियो का आविष्कार किया है जिनसे बालक स्वय सीख सकता है। इस उद्देश्य से 'करके सीखना खेल द्वारा सीखना' रेडियो, पयटन चलचित्र आदि को शिक्षण विधियो मे स्थान दिया जाता है। **Ryburn** (p 5) के अनुसार —**"मनोविज्ञान के ज्ञान मे प्रगति होने के कारण ही शिक्षण विधियो मे क्रान्तिकारी परिवतन हुए हैं।"**

(9) अनुशासन की नई विधिया—पहले समय मे बालको को अनुशासन मे रखने की केवल एक विधि थी—शारीरिक दण्ड। विद्यालय मे दण्ड और दण्ड का

भय उत्पन्न करके आतक और कठोरता के वातावरण का निर्माण किया जाता था। मनोविज्ञान ने दण्ड भय और कठोरता पर आधारित अनुशासन को सारहीन प्रमाणित कर दिया है। इनके स्थान पर उसने प्रेम प्रशसा और सहानुभूति को अनुशासन के कही अधिक अच्छे आधार बताया है। वह हमे अनुशासनहीनता के कारणा को खोजने और उनको दूर करने का परामश देता हैं।

(10) मूल्याकन की नई विधिया—बालको द्वारा अर्जित किय जाने वाले ज्ञान का मूल्याकन करने के लिए अति दीघकाल से मौखिक और लिखित परीक्षाओ का प्रयोग किया जा रहा है। इन परीक्षाओ के दोषो को दूर करने के लिए मनोविज्ञान ने अनेक नई विधियो की खोज की है जसे—बुद्धि परीक्षा, व्यक्तित्व परीक्षा वस्तुनिष्ठ परीक्षा आदि।

(11) शिक्षा के उद्देश्यो की प्राप्ति व सफलता—Drever के अनुसार मनोविज्ञान—शिक्षा के उद्देश्यो को निर्धारित नही करता है पर वह हमको यह निश्चित रूप से बताता है कि उनकी प्राप्ति सम्भव है या नही। इतना ही नही मनोविज्ञान की सहायता के बिना शिक्षक यह नही जान सकता है कि वह अपने उद्देश्यो को प्राप्त करने मे सफल हुआ है या नही।

(12) तीन सम्बन्धों का विकास—**Ryburn** का मत है कि शिक्षा मे तीन प्रकार के सम्बन्ध होत है—बालक और शिक्षक का सम्बन्ध बालक और समाज का सम्बन्ध एव बालक और विषय का सम्बन्ध। शिक्षा मे सफलता तभी मिल सकती है जब य तीनो सम्बन्ध उचित प्रकार के हा अर्थात् ये ऐसे हो कि बालक इनसे लाभान्वित हा। इस दिशा मे मनोविज्ञान बहुत सहायता देता है। **Ryburn** (p 13) के शब्दो मे —**'जब हम इन सम्बन्धो का उचित दिशाओ मे विकास करने का प्रयत्न करते है, तब मनोविज्ञान हमे सबसे अधिक सहायता देता है।"**

(13) नये ज्ञान का आधार पूव ज्ञान—स्टाउट का मत है —**"शिक्षा सिद्धान्त को मनोविज्ञान द्वारा दिया जाने वाला मुख्य सिद्धान्त यह है कि नवीन ज्ञान का विकास पूव ज्ञान के आधार पर किया जाना चाहिए।"**

The main principle which psychology lends to the theory of education is that new knowledge should be a development of previous knowledge —**Stout** *Analytic Psychology* Vol II pp 137 138

शिक्षा मनोविज्ञान का अथ प्रकृति व क्षेत्र
MEANING, NATURE & SCOPE OF EDUCATIONAL PSYCHOLOGY

Educational psychology has not yet reached the point where its content has been stabilized —**Ellis** (p 6)

शिक्षा-मनोविज्ञान का इतिहास
History of Educational Psychology

शिक्षा मनोविज्ञान के आरम्भ के विषय मे लेखको में कुछ मतभेद है। **Kolesnik** (p 5) ने इस विज्ञान का आरम्भ ईसा पूव पाँचवी शताब्दी के यूनानी दाशनिको से माना है और उनमे प्लेटो को भी स्थान दिया है। **Kolesnik** (p 6) के शब्दो मे —**"मनोविज्ञान और शिक्षा के सबप्रथम व्यवस्थित सिद्धान्तो मे एक सिद्धान्त प्लेटो का भी था।"**

Kolesnik के विपरीत **Skinner** (A—p 7) ने शिक्षा मनोविज्ञान का आरम्भ प्लेटो के शिष्य अरस्तू के समय से मानते हुए लिखा है —**"शिक्षा मनोविज्ञान का आरम्भ अरस्तू के समय से माना जा सकता है। पर शिक्षा मनोविज्ञान के विज्ञान की उत्पत्ति यूरोप मे पेस्टालाजी, हरबाट और फ्राबेल के कार्यों से हुई, जिन्होंने शिक्षा को मनोवज्ञानिक बनाने का प्रयास किया।"**

वास्तव मे इन महान शिक्षा दाशनिका को अपने काय की प्रेरणा **रूसो** से प्राप्त हुई जिसने शिक्षा को मनोवज्ञानिक आधार प्रदान करके शिक्षा मे मनोवज्ञानिक आन्दोलन का सूत्रपात किया। उस आन्दोलन को आधुनिक युग की महान् शिक्षिका **मा टेसरी** से बहुत बल प्राप्त हुआ। **Montessori** ने शिक्षा मे प्रयोगात्मक मनोविज्ञान की उपयोगिता पर बल देते हुए कहा —**"शिक्षक को प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का जितना अधिक ज्ञान होता है, उतना ही अधिक वह जानता है कि कसे पढ़ाया जाय।"**

मनोविज्ञान की शाखा के रूप मे शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति सन 1900 ई० मे मानी जाती है। अमरीका के प्रसिद्ध मनोवज्ञानिको–Thorndike Judd Terman Stanley Hall आदि के अनवरत प्रयासो के फलस्वरूप उसने सन 1920 मे स्पष्ट और निश्चित स्वरूप धारण किया। उनके इस काय को 1940 मे American Psychological Association और 1947 मे अमरीका की National Society of College Teachers of Education ने आगे बढाया। फलस्वरूप स्किनर के शब्दो मे शिक्षाविदो द्वारा यह स्वीकार किया जाने लगा —**"शिक्षा-मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है, जिसका सम्बन्ध पढाने और सीखने से है।"**

Educational psychology is that branch of psychology which deals with teaching and learning —**Skinner** (A—p 1)

शिक्षा मनोविज्ञान का अथ
Meaning of Educational Psychology

शिक्षा मनोविज्ञान दो शब्दो के योग मे बना है— शिक्षा और मनोविज्ञान। अत इसका शाब्दिक अथ है—'शिक्षा सम्बन्धी मनोविज्ञान। दूसरे शब्दो मे यह मनोविज्ञान का व्यावहारिक रूप है और शिक्षा की प्रक्रिया मे मानव व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। अत हम **स्किनर** के शब्दो मे कह सकते है — **'शिक्षा मनोविज्ञान अपना अथ शिक्षा से, जो सामाजिक प्रक्रिया है और मनोविज्ञान से, जो व्यवहार सम्बन्धी विज्ञान है, ग्रहण करता है।"**

Educational psychology takes its meaning from education a social process and from psychology a behavioural science — **Skinner** (A—p 1)

शिक्षा मनोविज्ञान के अथ का विश्लेषण करने के लिए **Skinner** ने अधो लिखित तथ्यो की ओर सकेत किया है —

1 शिक्षा-मनोविज्ञान का केन्द्र मानव व्यवहार है।
2 शिक्षा मनोविज्ञान खोज और निरीक्षण से प्राप्त किए गए तथ्यो का सग्रह है।
3 शिक्षा मनोविज्ञान मे सग्रहीत ज्ञान को सिद्धान्तो का रूप प्रदान किया जा सकता है।
4 शिक्षा मनोविज्ञान ने शिक्षा की समस्याओ का समाधान करने के लिए अपनी स्वय की पद्धतियो का प्रतिपादन किया है।
5 शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धान्त और पद्धतियाँ शक्षिक सिद्धान्तो और प्रयोगो को आधार प्रदान करते हैं।

शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषाएँ
Definitions of Educational Psychology

शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा की समस्याओ का अध्ययन विश्लेषण, विवेचन और समाधान करता है। अत इसकी परिभाषाओ मे अनेकरूपता मिलती है, यथा —

1 स्किनर —"शिक्षा-मनोविज्ञान के अ तगत शिक्षा से सम्बन्धित सम्पूण व्यवहार और व्यक्तित्व आ जाता है ।'

Educational psychology covers the entire range of behaviour and personality as related to education —**Skinner** (A—p 22)

2 क्रो व क्रो —"शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के ज म से वृद्धावस्था तक सीखने के अनुभवो का वणन और व्याख्या करता है ।"

Educational psychology describes and explains the learning experiences of an individual from birth through old age —**Crow & Crow** (p 7)

3 नाल व अन्य —"शिक्षा मनोविज्ञान मुख्य रूप से शिक्षा की सामाजिक प्रक्रिया से परिवर्तित या निर्देशित होने वाले मानव व्यवहार के अध्ययन से सम्बन्धित है ।"

Educational psychology is concerned primarily with the study of human behaviour as it is changed or directed under the social process of education —**Noll & Others** *Journal of Educational Psychology* 1948 p 361

4 एलिस क्रो —"शिक्षा मनोविज्ञान वज्ञानिक विधि से प्राप्त किए जाने वाले मानव प्रतिक्रियाओ के उन सिद्धान्तों के प्रयोग को प्रस्तुत करता है, जो शिक्षण और अधिगम को प्रभावित करते है ।"

Educational psychology represents the application of scientifically derived principles of human reaction that affect teaching and learning —**Alice Crow** (p 1)

5 सारे व टेलफोड —"शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य सम्बन्ध सीखने से है । यह मनोविज्ञान का वह अग है, जो शिक्षा के मनोवज्ञानिक पहलुओं के वज्ञानिक खोज से विशेष रूप से सम्बन्धित है ।"

The major concern of educational psychology is learning It is that field of psychology which is primarily concerned with the scientific investigation of the psychological aspects of education — **Sawley & Telford** (pp 5 & 6)

प्रयास करता है।"

शिक्षा मनोविज्ञान के उद्देश्य
Aims of Educational Psychology

शिक्षा मनोविज्ञान के उद्देश्य लगभग वही है जो शिक्षा के हैं। फिर भी लेखको ने अपने विचारो के अनुसार उनके लिए विविध प्रकार की शब्दावली का प्रयोग किया है, यथा —

1 **Garrison & Others** (p 5) के अनुसार —"शिक्षा मनोविज्ञान के उद्देश्य हैं—व्यवहार का ज्ञान, भविष्यवाणी और नियन्त्रण।"

2 **Kuppuswamy** (p 4) के अनुसार —"शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य मनोविज्ञान के सिद्धान्तो को उत्तम शिक्षण और उत्तम अधिगम (सीखना) के हितो में प्रयोग करना है।"

3 **Kolesnik** (p 27) के अनुसार —"शिक्षा-मनोविज्ञान का उद्देश्य—शिक्षक को उन समस्याओ का समाधान करने मे सहायता देना है, जिनका सम्बन्ध प्रेरणा, मूल्याकन, कक्षा प्रबन्ध, शिक्षण विधियो, छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं, उनके मानसिक स्वास्थ्य और उनके चरित्र निर्माण से होता है।"

4 **Kelly** के अनुसार[1] —कली ने शिक्षा मनोविज्ञान के 9 उद्देश्य बताये हैं—(1) बालक के स्वभाव का ज्ञान प्रदान करना, (2) बालक की वृद्धि और विकास का ज्ञान प्रदान करना, (3) बालक को अपने वातावरण से सामजस्य स्थापित

करने मे सहायता देना (4) शिक्षा के स्वरूप उद्देश्यो और प्रयोजन से परिचित कराना (5) सीखने और सिखाने के सिद्धान्तो और विधियो से अवगत कराना (6) सवेगो के नियत्रण और शैक्षिक महत्त्व का अध्ययन करना (7) चरित्र निमाण की विधियो और सिद्धान्तो से अवगत कराना (8) विद्यालय मे पढाये जाने वाले विषयो मे छात्र की योग्यताओ का माप करने की विधियो मे प्रशिक्षण देना (9) शिक्षा मनोविज्ञान के तथ्या और सिद्धान्तो की जानकारी के लिए प्रयोग की जाने वाली वज्ञानिक विधियो का ज्ञान प्रदान करना ।

5 **Skinner** (B—pp 15 17) के अनुसार —**स्किनर** ने शिक्षा मनोविज्ञान के उद्देश्यो को दो भागो मे विभाजित किया है—(अ) सामान्य उद्देश्य (ब) विशिष्ट उद्देश्य ।

(अ) सामान्य उद्देश्य General Aim —**स्किनर** ने शिक्षा मनोविज्ञान का सामान्य उद्देश्य केवल एक मानते हुए लिखा है — **शिक्षा मनोविज्ञान का सामान्य उद्देश्य है—सगठित तथ्यो और सामान्य नियमो का एक ऐसा सग्रह प्रदान करना, जिसकी सहायता से शिक्षक सास्कृतिक और व्यावसायिक लक्ष्यो को अधिक से अधिक प्राप्त कर सके ।"**

The general aim of educational psychology is to provide a body of organized facts and generalizations that will enable the teacher to realize increasingly both cultural and professional objectives —**Skinner** (B—p 15)

(ब) विशिष्ट उद्देश्य Specific Aims—**स्किनर** ने शिक्षा मनोविज्ञान के 8 विशिष्ट उद्देश्य बताये है—(1) बालको की बुद्धि ज्ञान और व्यवहार मे उन्नति किए जाने के विश्वास को दृढ बनाना (2) बालको के प्रति निष्पक्ष और सहानुभूति पूण दृष्टिकोण का विकास करने मे सहायता देना (3) बालको के वाछनीय व्यवहार के अनुरूप शिक्षा के स्तरो और उद्देश्यो को निश्चित करने मे सहायता देना (4) सामाजिक सम्बन्धो के स्वरूप और महत्त्व को अधिक अच्छी प्रकार समझने मे सहायता देना (5) शिक्षण की समस्याओ का समाधान करने के लिए प्रयोग किए जाने वाले तथ्यो और सिद्धान्ता का ज्ञान प्रदान करना (6) शिक्षक को अपने और दूसरो के शिक्षण के परिणामो को जानने मे सहायता देना (7) शिक्षको को छात्रा के व्यवहार की व्याख्या करने के लिए आवश्यक तथ्य और सिद्धान्त प्रदान करना (8) प्रगतिशील शिक्षण विधिया निर्देशन कायक्रमो एव विद्यालय-सगठन और प्रशासन के स्वरूपो को निश्चित करने मे सहायता देना ।

के स्वरूपो को निश्चित करने मे सहायता देना ।

शिक्षा-मनोविज्ञान का क्षेत्र
Scope of Educational Psychology

वतमान शताब्दी के पूर्वाद्ध मे जन्म लेने के कारण शिक्षा मनोविज्ञान अपनी

2

शशवावस्था मे से होकर गुजर रहा है । यही कारण है कि उसके क्षेत्र की सीमायें अभी तक निर्धारित नही हो पाई हैं । परिणामत शिक्षा मनोविज्ञान की पुस्तको की सामग्री मे एकरूपता के दशन दुलभ है । आचर का यह कथन अक्षरश सत्य है[1] — **"यह बात उल्लेखनीय है कि जब हम शिक्षा-मनोविज्ञान की कोई नवीन पाठ्यपुस्तक खोलते हैं, तब हम यह नहीं जानते हैं कि उसकी विषय-सामग्री सम्भवत क्या होगी ।"**

शिक्षा मनोविज्ञान की विषय सामग्री का इस अनिश्चित परिस्थिति से निश्चित परिस्थिति मे लाने का अनेक शिक्षा विशारदो द्वारा उद्योग किया गया है । उनमे से कुछ के विचारो का अवलोकन कीजिए —

1 क्रो व क्रो —**"शिक्षा मनोविज्ञान की विषय सामग्री का सम्ब ध सीखने को प्रभावित करने वाली दशाओं से है ।"**

The subject matter of educational psychology is concerned with the conditions that affect learning —**Crow & Crow** (p 7)

2 डगलस व हालड — **'शिक्षा मनोविज्ञान की विषय सामग्री शिक्षा की प्रक्रियाओ मे भाग लेने वाले व्यक्ति की प्रकृति, मानसिक जीवन और व्यवहार है ।"**

The subject matter of educational psychology is the nature mental life and behaviour of the individual undergoing the processes of education —**Douglas & Holland** (pp 29 30)

3 गरिसन व अन्य —**"शिक्षा मनोविज्ञान की विषय सामग्री का नियोजन दो दृष्टिकोणों से किया जाता है —(1) छात्रो के जीवन को समृद्ध और विकसित करना, एव (2) शिक्षको को अपने शिक्षण मे गुणात्मक उन्नति करने मे सहायता देने के लिये ज्ञान प्राप्त करना ।"**

The subject matter of educational psychology is designed (1) to enhance and enrich the lives of the learners and (2) to furnish teachers with the knowledge and understanding that will help them institute improvements in the quality of instruction — **Garrison & Others** (pp 6 7)

उपरिलिखित दोनो दृष्टिकोणो को ध्यान मे रखकर शिक्षा मनोविज्ञान मे निम्नाकित बातो का अध्ययन किया जाता है —

1 बालक की विशेष योग्यताओ का अध्ययन ।
2 बालक की रुचियो और अरुचियो का अध्ययन ।
3 बालक के वशानुक्रम और वातावरण का अध्ययन ।
4 बालक की प्रेरणाओ और मूल प्रवृत्तियो का अध्ययन ।

5 बालक के विकास की अवस्थाओ का अध्ययन ।

6 बालक की शारीरिक, मानसिक और सवेगात्मक क्रियाओ का अध्ययन ।

7 बालक के शारीरिक मानसिक चारित्रिक सामाजिक सवेगात्मक और सौदर्यात्मक विकास का अध्ययन ।

8 बालको की व्यक्तिगत विभिन्नताओ का अध्ययन ।

9 अपराधी असाधारण और मानसिक रोगो मे ग्रस्त बालका का अध्ययन ।

10 शिक्षण विधियो की उपयोगिता और अनुपयोगिता का अध्ययन ।

11 सीखने की क्रियाओ का अध्ययन ।

12 शिक्षा की समस्याओ का अध्ययन ।

13 शिक्षा के उद्देश्यो और उनको प्राप्त करने की विधियो का अध्ययन ।

14 अनुशासन सम्बन्धी समस्याओ का अध्ययन ।

15 पाठ्यक्रम निर्माण से सम्बन्धित अध्ययन ।

निष्कर्ष के रूप मे हम स्किनर के शब्दो मे कह सकते हैं —"शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र मे वह सब ज्ञान और विधियाँ सम्मिलित हैं जो सीखने की प्रक्रिया को अधिक अच्छी प्रकार समझने और अधिक कुशलता से निर्देशित करने के लिए आवश्यक हैं ।"

Educational psychology takes for its province all information and techniques pertinent to a better understanding and a more efficient direction of the learning process

—Skinner (A—p 22)

The teacher should be prepared to apply in his teachi activities the psychological principles that are basic to successf teaching and effective learning —**Alice Crow** (p 9)

शिक्षक के लिये मनोविज्ञान की उपयोगिता
Utility of Psychology for Teacher

शिक्षक के लिये मनोविज्ञान की क्या उपयोगिता है ? वह इसका प्रयोग कि प्रकार कर सकता है ? उसको इससे किस प्रकार सहायता मिल सकती है ? हम और इनसे सम्बन्धित अन्य प्रश्नो पर निम्नाकित पक्तियो मे अपने विचारो को य कर रहे हैं ।

1 स्वय का ज्ञान व तयारी—यक्ति किसी काय को करने मे तभी सफ होता है जब उसमे उस काय को करने की योग्यता होती है । मनोविज्ञान या शिक्ष मनोविज्ञान की सहायता से अध्यापक अपने स्वभाव बुद्धि स्तर यवहार योग्य आदि का ज्ञान प्राप्त करता है । यह ज्ञान उसे अपने शिक्षण-काय मे सफल बनने सहायता देता है और इस प्रकार उसकी व्यावसायिक तयारी म अतिशय योग दे है । स्किनर का मत है —**"शिक्षा मनोविज्ञान, अध्यापको की तयारी की आधा शिला है ।**

Educational psychology is the foundation stone in tl preparation of teachers —**Skinner** (A—p 12)

2 बाल विकास का ज्ञान—मनोविज्ञान के अध्ययन से शिक्षक को बा विकास की विभिन्न अवस्थाओ का ज्ञान हो जाता है । वह इन अवस्थाओ मे बाल की शारीरिक मानसिक सामाजिक आदि विशेषताआ से परिचित हा जाता है । इन विशेषताआ को ध्यान मे रखकर विभिन्न अवस्थाओ के बालको के लिए पाठ विषया और क्रियाओ का चुनाव करने मे सफलता प्राप्त करता है ।

3 बाल स्वभाव व यवहार का ज्ञान—शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक बालक के स्वभाव और यवहार से अवगत कराता है । इन दोनो बाता के आध बालक की मूल प्रवृत्तियाँ और सवेग होत है । अध्यापक विभिन्न अवस्थाओ के बाल की मूल प्रवृत्तियो और सवेगो से परिचित होने के कारण उनका अधिक उत्तम शिक्ष और निर्देशन करने मे सफल होता है । **Ryburn** (p 4) का मत है —**'हमें बा स्वभाव और यवहार का जितना अधिक ज्ञान होता है, उतना ही अधिक प्रभावपू बालक से हमारा सम्बन्ध होता है । मनोविज्ञान हमे यह ज्ञान प्राप्त करने मे सहाय दे सकता है ।"**

4 बालको का चरित्र निर्माण—शिक्षा मनोविज्ञान बालको के चरित्र निर्मा मे सहायता देता है । यह शिक्षक को उन विधियो को बताता है जिनका प्रयोग कर वह अपने छात्रो म नतिक गुणा का विकास कर सकता है ।

5 बालको का ज्ञान—शिक्षक अपने कत्तव्यो का कुशलता से पालन तभी कर सकता है, जब उसे अपने छात्रो का पूण ज्ञान हो। वह भले ही अपने विषय और उसके शिक्षण मे अद्वितीय योग्यता रखता हो पर यदि उसे अपने छात्रो का ज्ञान नही है तो उसे पग-पग पर निराशा को अपनी सहचरी बनाना पडता है। किसी विषय और उसके शिक्षण मे योग्यता होना एक बात है पर उनको छात्रा को रुचियो और क्षमताओ के अनुकूल बनाना दूसरी बात है। अत **Douglas & Holland** (p 12) का मत है —**"क्योंकि शिक्षा मनोविज्ञान का सम्ब ध छात्रो के अध्ययन से है, अत यह उन व्यक्तियों के ज्ञान का महत्त्वपूण अग प्रतीत होता है, जो शिक्षण काय करना चाहते हैं।"**

6 बालको की आवश्यकताओ का ज्ञान—विद्यालयो म शिक्षा ग्रहण करने वाले बालका की कुछ आवश्यकताएँ होती है जसे—प्रेम आत्म सम्मान स्वत त्रता और किये जाने वाले कार्यो की स्वीकृति की आवश्यकता। यदि उनकी ये आवश्य कताए पूण कर दी जाती है तो वे सन्तुष्ट हो जात है और फलस्वरूप, उनका विकास स्वाभाविक ढङ्ग से होता है। शिक्षा मनोविज्ञान, अध्यापक को बालको की इन आव श्यकताओ से अवगत करता है। **Skinner** (A—p 15) के शब्दो मे —**"अध्यापक, शिक्षा मनोविज्ञान से प्रत्येक छात्र की अनोखी आवश्यकताओ के बारे मे बहुत कुछ सीख सकते हैं।"**

7 बालको की व्यक्तिगत विभिन्नताओ का ज्ञान—मनोविज्ञान की खोजो ने सिद्ध कर दिया है कि बालको की रुचियो योग्यताओ क्षमताओ आदि मे अ तर होता है। शिक्षक को कक्षा मे ऐसे ही बालको को शिक्षा देनी पडती है। वह अपने इस काय मे तभी सफल हो सकता है जब वह मनोविज्ञान का अ ययन करके उनकी यक्तिगत विभिन्नताओ से पूणरूपेण परिचित हो जाय।

8 बालको की मूलप्रवृत्तियो का ज्ञान—**मक्डूगल** के अनुसार—**"मूलप्रवृत्तियाँ सम्पूण मानव व्यवहार की चालक हैं।"** शिक्षा मनोविज्ञान, अध्यापक को बताता है कि मूल प्रवृत्तियाँ विभिन्न आयु के बालको में किस प्रकार के व्यवहार का कारण होती है। यह ज्ञान शिक्षक के लिए बहुत लाभदायक होता है क्योकि शिक्षक बालको के यवहार के कारणो को समझकर उसमे वाछित परिवतन कर सकता है। इस प्रकार वह उनका समाज का, विद्यालय का—सभी का हित कर सकता है।

9 बालकों के व्यक्तित्व का सर्वाङ्गीण विकास—शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य बालको के यक्तित्व का सर्वाङ्गीण विकास करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति मे शिक्षा मनोविज्ञान अतिशय योग देता है। यह शिक्षक को उन विधियो की जानकारी प्रदान करता है, जिनका प्रयोग करने से बालको के यक्तित्व का चतुमु खी विकास किया जा सकता है।

10 कक्षा की समस्याओं का समाधान—कक्षा-कक्ष की मुख्य समस्यायें है—अनुशासनहीनता, बाल अपराध समस्या बालक, छात्रो का पिछडापन आदि। मना

विज्ञान शिक्षक को इन समस्याओ के कारणा को खोजने और इनको दूर करने मे कुछ सीमा तक ही सहायता देता है। डेविस के अनुसार —**"मनोविज्ञान ने कक्षा कक्ष की दनिक समस्याओ का समाधान करने मे बहुत कम योग दिया है।"**

Psychology has contributed very little in the solution of the everyday problems of the class room —**Davis** *op cit* p 27

11 अनुशासन मे सहायता—शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को अनुशासन स्थापित करने और रखने की अनेक नवीन विधियाँ बताता है। इस सम्बन्ध मे मेलवी (Melvi) ने लिखा है —**"जो शिक्षक अपने छात्रों की रुचि के अनुसार शिक्षा देते हैं, उनके सामने अनुशासन की कठिनाइयाँ बहुत कम आती हैं। जब हम पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों और शिक्षण सामग्री मे सुधार करते हैं, तब हम अनुशासन की समस्याओ का पर्याप्त समाधान कर देते हैं या उनका अ त कर देते है।"**

12 उपयोगी पाठ्यक्रम का निर्माण—विकास की विभिन्न अवस्थाओ मे बालको की रुचियाँ प्रवृत्तियाँ और आवश्यकताये विभिन्न होती है। मनोविज्ञान इन बातो का ज्ञान प्रदान करके अध्यापक को विभिन्न अवस्थाओ के बालको के लिए उपयोगी पाठ्यक्रम का निर्माण करने मे सहायता देता है। **Skinner** (A—pp 18 19) ने लिखा है —**"उपयोगी पाठ्यक्रम बालको के विकास, व्यक्तिगत विभिन्नताओं प्रेरणा, मूल्यों और सीखने के सिद्धा तों के अनुसार मनोविज्ञान पर आधारित होना आवश्यक है।"**

13 उचित शिक्षण विधियों का प्रयोग—शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को यह बताता है कि विभिन्न परिस्थितियो मे बालको को सरलतापूवक सिखाने के लिए कौन-सी शिक्षण विधिया सबसे अधिक उचित और उपयोगी हो सकती है। **Skinner** (A—p 20) का कथन है —**"शिक्षा मनोविज्ञान, अध्यापक को शिक्षण विधियों का चुनाव करने मे सहायता देने के लिये सीखने के अनेक सिद्धा त प्रस्तुत करता है।"**

14 मूल्याकन की नई विधियो का प्रयोग—मूल्याकन छात्र और अध्यापक दोनो के लिए आवश्यक है। छात्र यह जानना चाहता हे कि उसने कितना ज्ञान प्राप्त किया है। शिक्षक यह जानना चाहता है कि वह छात्र को ज्ञान प्रदान करने मे किस सीमा तक सफल हुआ है। शिक्षा मनोविज्ञान मूल्याकन की ऐसी अनेक विधियाँ बताता है जिनका प्रयोग करने से छात्र अपनी प्रगति का और शिक्षक छात्र की प्रगति का अनुमान लगा सकता है। शिक्षक को होने वाले एक अन्य लाभ के बारे मे **Skinner** (A—p 20) ने लिखा है —**"शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान शिक्षक को शिक्षक के रूप मे अपनी स्वय की कुशलता का मूल्याकन करने मे सहायता देता है।"**